CBSE X	MT EDUCARE LTD.	Marks : 80
	SUBJECT : **HINDI COURSE - A**	
	SEMI PRELIM - II	
Date :	**MODEL ANSWER PAPER**	Time : 3 hrs.

	खण्ड : 'क'	
A.1.		
(क)	विंध्य को लाँघकर उत्तर भारत को दक्षिण भारत में मिलाने के तो बहुत प्रयास हुए, पर इस काम में सफलता बहुत कम मिली ।	**2**
(ख)	प्राकृतिक दृष्टि से भारत के तीन भाग स्पष्ट है उत्तरी भाग, दक्खिनी पठार, प्रायद्वीप जैसा । (कृष्णा नदी से अंतरीप तक का भाग)	**2**
(ग)	विविधता का सबसे बड़ा लक्षण है - अनेक भाषाओं का होना । इसके कारण उत्तर भारत के लोगों को दक्षिण में तथा दक्षिण भारत के लोगों को उत्तर भारत में कठिनाई होती है ।	**2**
(घ)	देश की सभी भागों में एक ही संस्कृति के मंदिर दिखाई देते हैं । ये सभी मंदिर हिंदुओं के करीब है । इन मंदिरों में एकता की भावना झलकती है ।	**1**
(ङ)	इस देश के प्राकृतिक ढाँचे में ही कोई ऐसी बात है जो सारे देश को एक शासन के अधीन लाने में बाधक है।	**1**
A.2.		
(क)	झपटते बाज और फन उठाए साँप में कवि को इसलिए सौंदर्य नजर आता है क्योंकि दोनों पेट भरने के लिए ऐसा कर रहे हैं ।	**2**
(ख)	कवि ने विभिन्न पशु-पक्षियों को संघर्ष की मुद्रा में दिखाया है । ऐसा दिखाकर वह प्रेरणा देना चाहता है कि रोटी के लिए घोर परिश्रम करो ।	**2**
(ग)	इस कविता से भूख शांत करने के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है ।	**1**
(घ)	कवि कहता है कि आदमी तभी सुंदर दिखता है, वह भी रोजी-रोटी के लिए संघर्ष करता है ।	**1**
(ङ)	भूख और संघर्ष ।	**1**
	खण्ड : 'ख'	
A.3.		
(क)	जो व्यक्ति परिश्रमी होता है, वह अवश्य सफल होता है ।	**1**
(ख)	मुझे वहाँ जाना था इसलिए सवेरे उठना पड़ा ।	**1**
(ग)	संयुक्त वाक्य ।	**1**
A.4.		
(क)	मैं अंग्रेजी का उपन्यास नहीं पढ़ सकता ।	**1**
(ख)	हिंदी के बारे में मंत्रीजी द्वारा क्या किया जा रहा है ।	**1**

(ग)	रमा से चला नहीं जाता ।	**1**
(घ)	वृद्धा से सोया नहीं जाता ।	**1**
A.5.		
(क)	**हम** – सर्वनाम, प्रथम पुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ता ।	**1**
(ख)	**सोहन** – संज्ञा, व्यक्तिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता ।	**1**
(ग)	**घर में** – संज्ञा, जातिवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, अधिकरण ।	**1**
(घ)	**वीर** – विशेषण, 'पुरुष' विशेष्य का विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन ।	**1**
A.6.		
(क)	श्रृंगार रस के भेद - संयोग श्रृंगार रस, वियोग श्रृंगार रस ।	**1**
(ख)	भयानक रस का मूल स्थायी भाव भय है।	**1**
(ग)	भावों को जाग्रत करने के कारणों को 'विभाव कहते हैं । इसके प्रकार हैं - 1. आश्रय 2. आलंबन 3. उद्दीपन	**1**
(घ)	हास्य रस हाथी जैसी देह है, गैंडे जैसी खाल । तरबूजे सी खोपड़ी, खरबूजे से गाल।।	**1**
	खण्ड : 'ग'	
A.7.		
(क)	लेखक कहता है कि आज के पढ़े-लिखे लोग हत्या, डकैती, बमबारी, चोरी, रिश्वत और व्यभिचार में लगे हुए है । यदि इन बुराइयों को उनकी पढ़ाई का परिणाम माना जाए तो फिर सारी शिक्षण-संस्थाएँ बंद हो जानी चाहिए ।	**2**
(ख)	लेखक ने स्त्री-शिक्षा का विरोध करने वालों को पागल, बात-व्यथित और ग्रहग्रस्त कहा है । आशय यह है कि जिनकी बुद्धि कम है, जो किसी कारण व्यथित है या जिन पर किसी दुष्ट ग्रह का कोप है, केवल वही स्त्री-शिक्षा का विरोध कर सकते हैं ।	**2**
(ग)	शंकुतला ने अपने प्रेमी-पति दुष्यंत द्वारा भुला दिये जाने पर उसे कटु वचन कहे थे । लेखक के अनुसार शंकुतला के ये वचन बिल्कुल स्वाभाविक थे, अशिक्षा का कुपरिणाम नहीं थे ।	**1**
A.8.		
(क)	अपने तन को ढँकने के लिए, स्वयं को गर्मी, सर्दी और नंगेपन से बचाने के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा । सुई-धागे की खोज से पहले मनुष्य नंगा रहता था । वह जैसे-तैसे वृक्ष की खाल या पत्तों से तन को ढँकता था । किंतु उससे शरीर की ठीक से रक्षा नहीं हो पाती थी । अत: जब उसने सुई-धागे की खोज कर ली तो उसके हाथ बहुत बड़ी तकनीक लग नई । यह तकनीक इतनी कारगर थी कि आज भी हम लोग इसका भरपूर उपयोग करते है ।	**2**

(ख)	भटियारखाने के दो अर्थ हैं - 1. जहाँ हमेशा भट्टी जलती रहती है, अर्थात् चूल्हा चढ़ा रहता है । 2. जहाँ बहुत शोर-गुल रहता है । कमीने और असभ्य लोगों का जमघट । पाठ के संदर्भ में यह शब्द पहले अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । रसोईघर में हमेशा खाना-पकाना चलता रहता है । पिताजी अपने बच्चों को घर- गृहस्थी या चूल्हे-चौके तक सीमित नहीं रखना चाहते थे । वे उन्हें जागरूक नागरिक बनाना चाहते थे । इसलिए उन्होंने रसोईघर की उपेक्षा करते हुए 'बटियारखाना' कहकर संबोधित किया है ।	**2**
(ग)	काशी में पुरानी परंपराएँ लुप्त हो रही हैं । खान-पान की पुरानी चीजें और विशेषताएँ नष्ट होती जा रही हैं । मलाई-बरफ वाले गायब हो गए हैं । कुलसुम की छन्न करती संगीतात्मक कचौड़ी और देशी घी की जलेबी आज नहीं रही । न ही आज संगीत, साहित्य और अदब का वैसा मान रह गया है । हिंदुओं और मुसलमानों का पहले जैसा मेलजोल भी नहीं रहा । अब गायकों के मन में संगीतकारों का वैसा सम्मान नहीं रहा । ये सब बातें बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करती हैं ।	**2**
(घ)	शहनाई मंगलध्वनि का वाद्य है । भारत में जितने भी शहनाईवादक हुए हैं, उनमें बिस्मिल्ला खाँ का नाम सबसे ऊपर है । उनसे बढ़कर सुरीला शहनाईवादक और कोई नहीं हुआ । इसलिए उन्हें शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा गया है ।	**2**
A.9.		
(क)	लड़की की माँ के दुख को प्रामाणिक कहा गया है । क्यों - लड़की की माँ अपना हर सुख-दुख अपनी कन्या के साथ बाँटती है। उसे दुख है कि उनके चले जाने के बाद वह बिल्कुल अकेली रह जाएगी। मानों उसकी अंतिम पूँजी भी उसके हाथ से निकल जाएगी ।	**2**
(ख)	माँ अपनी बेटी को अंतिम पूँजी मानती है। क्यों - वह अपने गहरे दुखों को, नारी- जीवन के दुख -दर्द को केवल बेटी के साथ बाँट सकती है। विवाह से पहले वह अपनी माँ के साथ दुख बाँट सकती थी। वह पूँजी भी चली गई । अब अंतिम पूँजी रही बेटी ।	**2**
(ग)	'दुख बाँचने' का तात्पर्य है - जीवन में आगे आने वाले दुखों की समझ रखना ।	**1**
A.10.		
(क)	संगतकार के माध्यम से कवि किसी भी कार्य अथवा कला में लगे सहायक कर्मचारियों और कलाकारों की ओर संकेत कर रहा है । वे सहायक कलाकार स्वयं को महत्त्व न देकर मुख्य कलाकार और मुख्य व्यक्ति के महत्त्व को बढ़ाने में अपनी शक्ति लगा देते हैं ।	**2**
(ख)	बच्चे की मुस्कान सरल , निश्छल, भोली और निष्काम होती है । उसमें कोई स्वार्थ नहीं होता । यह सहज - स्वाभाविक होती है । बड़ों की मुसकान कुटिल, अर्थपूर्ण, सोची - समझी, सकाम और सस्वार्थ	

होती है । वे तभी मुसकराते हैं जबकि वे सामने वाले में कोई रुचि रखते हैं । वे अपनी मुस्कान को नाप तोलकर, कोई उद्देश्य पूरा करने के लिए, किसी को महत्त्व देने के लिए घटाते - बढ़ाते हैं । बड़ों की मुस्कान उनके मन की स्वाभाविक गति न होकर लोक व्यवहार का अंग होती है । **2**

(ग) गर्मी की चिलचिलाती धूप में दूर सड़क पर पानी की चमक दिखाई देती है । हम वहाँ जाकर देखते हैं तो कुछ नहीं होता । प्रकृति के इस भ्रामक रूप को 'मृगतृष्णा' कहा जाता है । इस कविता में इसका अर्थ छलावे और भ्रम के लिए किया गया है । कवि कहना चाहता है कि लोग प्रभुता अर्थात बड़प्पन में सुख मानते हैं । किंतु बड़े होकर भी कोई सुख नहीं मिलता । अत: बड़प्पन का सुख दूर से ही दिखाई देता है । यह वास्तविक सच नहीं है । **2**

(घ) 'उत्साह' कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है :

1. बादल मानव - जीवन में क्रांति लाने की ओर संकेत करता है ।
2. मानव - जीवन की पीड़ाओं को दूर करने की ओर संकेत करता है ।
3. जीवन को उत्साह ओर संघर्ष के लिए प्रेरित करता है ।
4. जीवन में नवीनता और परिवर्तन लाने की ओर संकेत करता है । **2**

A.11. लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव उसके अंदर की विवशता को बाहर निकालने में उतनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह नहीं करता जितना काम अनुभूति करती है । जब तक मन में अनुभूति नहीं जागती तब तक लेखन नहीं हो सकता । यही अनुभूति ही आभ्यंतरिक विवशता बनाती है । यह अनुभूति संवेदना जगाती है और लेखन में मदद करती है । **4**

अथवा

दुलारी का टुन्नू से परिचय केवल छह माह पुराना था । पिछली भादों में तीज के अवसर पर दुलारी खोजवाँ बाजार में गाने गई थी । दुक्कड़ पर गाने वालियों में दुलारी की बहुत प्रसिद्धि थी । कजली - दंगल में दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय हुआ था । जब दुलारी का साधारण गाना हो चुका, तब सवाल- जवाब के लिए दुक्कड़ पर चोट पड़ी अर्थात् यह एक प्रकार की चुनौती थी । विपक्ष की ओर से 16-17 वर्ष का टुन्नू गौनहारियों के गोल में सबसे आगे खड़े दुलारी की ओर ललकार उठा - ''रानियाँ ल परमेसरी लोट'' (प्रामिसरी नोट) । टुन्नू पूरे जोश के साथ गाकर दुलारी का उत्तर दे रहा था । यहीं पहली बार दुलारी का टुन्नू से परिचय हुआ । यह परिचय गायक के रूप में हुआ । **4**

खण्ड : 'घ'

A.12.

(क)

भारतीय गाँव और महानगर

नगर और गाँव की तुलना – भारतीय गाँव और महानगर में वही संबंध है, जो सीधे–सादे बूढ़े बाप और उसकी अल्ट्रा माडर्न संतान में होता है । गाँव शहरों को सींचते हैं, उन्हें धन, श्रम, माल देते हैं ; परंतु शहर फिर भी गाँवों की ओर ताकते तक नहीं ।

	गाँवों के सुख – भारत की अधिकांश जनता गाँव में रहकर खेती करती है । गाँवों में प्रकृति का साथ रहता है । लंबे–चौड़े खेत, बाग–बगीचे, कोयल की कूक, सर्दी–गर्मी–बरसात का पूरा आनंद ग्रामीण जीवन में ही लिया जा सकता है । प्रकृति की गोद में प्रदूषण का नहीं, सर्वत्र हरियाली, स्वच्छता और स्वास्थ्य का साम्राज्य रहता है । **गाँवों के दुख –** दुर्भाग्य से आज गाँवों में अभाव ही अभाव हैं । न सड़कें, न बिजली, न पानी, न आधुनिक वस्तुएँ । सब चीजों के लिए शहरों की ओर ताकना पड़ता है । डॉक्टरों के नाम पर नीम–हकीम या आर.एम.पी. ; स्कूलों के नाम पर अनाथालय से विद्यालय, सफाई के नाम पर कूड़े के ढेर, गोबर और कीचड़ से लथपथ ज़िंदगी को देखकर सचमुच वहाँ रहने का मन नहीं करता । **महानगरों के सुख –** महानगरों की ज़िंदगी अत्यंत सुखदायी है । यहाँ सब प्रकार की आधुनिकतम सुविधाएँ उपलब्ध हैं । महानगर में रहने वाला व्यक्ति २४ घंटे अपने लिए मनोरंजन की सामग्री सामने पाता है । विश्व के सभी देशों से सीधे संपर्क कर सकता है । यहाँ की ज़िंदगी आराम और सुख से भरी हुई है । **महानगरों के दुख –** महानगरों के पास सारे सुख–साधन तो हैं परंतु फिर भी यहाँ का आदमी सुखी नहीं है । यहाँ निरंतर संघर्ष, होड़, ईर्ष्या, षड्यंत्र, दुर्घटना का बोलबाला है । यहाँ के सभी निवासी ऊँचे उठने और उड़ने के लिए आतुर हैं । इसके लिए आपसी खींचतान और स्वार्थ का जमकर प्रदर्शन होता है । महानगरों में रिश्तों के मधुर संबंध गायब हो गए हैं । चकाचौंध के मारे लोग आत्मीयता और स्नेह का रस खो बैठे हैं । **प्रदूषण –** महानगरों में बढ़ता हुआ प्रदूषण और बढ़ती हुई दुर्घटनाएँ और भी चिंता का कारण हैं । धुएँ, शोर और कृत्रिमता के कारण महानगरों में खान–पान, रहन–सहन पवित्र नहीं रह गया है । रोज ढेर सारा धुआँ और पेट्रोल हमारी साँसों में चला जाता है । सड़कों पर भीड़ इतनी बढ़ गई है कि नित्य जानलेवा दुर्घटनाएँ बढ़ रही हैं । **निष्कर्ष –** वास्तव में गाँव और महानगर–दोनों के अपने–अपने सुख और दुख हैं । यदि गाँवों में महानगरों की सुख–सुविधाएँ बढ़ा दी जाएँ और महानगरों में गाँवों की सहजता, सादगी, आत्मीयता उत्पन्न कर दी जाए तो दोनों जगहें आनंदमयी हो सकती हैं ।	**10**
(ख)	**मेरे जीवन का लक्ष्य या उद्देश्य** **लक्ष्य का निश्चय –** मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ । मेरे मन में एक ही सपना है कि मैं इंजीनियर बनूँगा । **लक्ष्यपूर्ण जीवन के लाभ –** जब से मेरे भीतर यह सपना जागा है, तब से मेरे जीवन में अनेक परिवर्तन आ गए हैं । अब मैं अपनी पढ़ाई की ओर अधिक ध्यान देने लगा हूँ । पहले क्रिकेट के खिलाड़ियों और फिल्मी तारिकाओं में गहरी रुचि लेता था, अब ज्यामिति की रचनाओं और रासायनिक मिश्रणों में रुचि लेने लगा हूँ । अब पढ़ाई में रस आने लगा है । निरुद्देश्य पढ़ाई बोझ थी । लक्ष्यबद्ध पढ़ाई में आनंद है । सच ही कहा था कार्लाइल ने– ''अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाओ, और इसके बाद अपना सारा शारीरिक और मानसिक बल, जो ईश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमें लगा दो ।'' **मेरा संकल्प –** मैंने निश्चय किया है कि मैं इंजीनियर बनकर इस संसार को नए-नए साधनों से संपन्न करूँगा । मेरे देश में जिस वस्तु की आवश्यकता होगी, उसके अनुसार मशीनों का निर्माण करूँगा । देश	

	में जल–बिजली, सड़क या संचार–जिस भी साधन की आवश्यकता होगी, उसे पूरा करने में अपना जीवन लगा दूँगा । मैं गरीब परिवार का बालक हूँ । मेरे पिता किराए के मकान में रहे हैं । धन की तंगी के कारण हम अपना मकान नहीं बना पाए । यही दशा मेरे जैसे करोड़ों बालकों की है । मैं बड़ा होकर भवन–निर्माण की ऐसी सस्ती, सुलभ योजनाओं में रुचि लूँगा जिससे मकानहीनों को मकान मिल सके । मैंने सुना है कि कई इंजीनियर धन के लालच में सरकारी भवनों, सड़कों, बाँधों में घटिया सामग्री लगा देते हैं । यह सुनकर मेरा हृदय रो पड़ता है । मैं कदापि यह पाप–कर्म नहीं करूँगा, न अपने होते यह काम किसी को करने दूँगा । **लक्ष्य–पूर्ति का प्रयास –** मैंने अपने लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में प्रयास करने आरम्भ कर दिए हैं । गणित और विज्ञान में गहरा अध्ययन कर रहा हूँ । अब मैं तब तक आराम नहीं करूँगा, जब तक कि लक्ष्य को पा न लूँ । कविता की ये पंक्तियाँ मुझे सदा चलते रहने की प्रेरणा देती हैं– **धनुष से जो छूटता है बाण कब पथ में ठहरता ।** **देखते ही देखते वह लक्ष्य का ही बेध करता ।** **लक्ष्य–प्रेरित बाण हैं हम, ठहरने का काम कैसा ?** **लक्ष्य तक पहुँचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा ?**	**10**
(ग)	**वन और हमारा पर्यावरण** **वन और पर्यावरण –** वन और पर्यावरण का गहरा संबंध है । ये सचमुच जीवनदायक हैं । ये वर्षा लाने में सहायक होते हैं और धरती की उपजाऊ - शक्ति को बढ़ाते हैं । वन ही वर्षा के धारासार जल को अपने भीतर सोखकर खतरा रोकते हैं । यही रुका हुआ जल धीरे - धीरे सारे पर्यावरण में पुनः चला जाता है । वनों की कृपा से ही मिट्टी का कटाव रुकता है । सूखा कम पड़ता है तथा रेगिस्तान का फैलाव रुकता है । **प्रदूषण - निवारण में सहायक –** आज हमारे जीवन की सबसे बड़ी समस्या है - पर्यावरण - प्रदूषण । कार्बनडाईआक्साइड, गंदा धुआँ कर्णभेदी आवाज, दूषित जल - इन सबका अचूक उपाय है - वन । वन हमारे द्वारा छोड़ी गई गंदी साँसों (कार्बन डाईआक्साइड) को भोजन के रूप में ले लेते हैं और बदले में हमें जीवनदायी आक्सीजन प्रदान करते हैं । इन्हीं जंगलों में असंख्य,अलभ्य जीव - जंतु निवास करते हैं जिनकी कृपा से प्राकृतिक संतुलन बना रहता है । आज शहरों में लगातार ध्वनि - प्रदूषण बढ़ रहा है । वन और वृक्ष ध्वनि - प्रदूषण भी रोकते हैं । यदि शहरों में उचित अनुपात में पेड़ लगा दिए जाएँ तो प्रदूषण की भयंकर समस्या का समाधान हो सकता है । परमाणु ऊर्जा के खतरे को तथा अत्यधिक ताप को रोकने का सशक्त उपाय भी वनों के पास है । **वनों की अन्य उपयोगिता -** वन ही नदियों, झरनों और अन्य प्राकृतिक जल - स्रोतों के भंडार हैं । इनमें ऐसी दुर्लभ वनस्पतियाँ सुरक्षित रहती हैं जो सारे जग को स्वास्थ्य प्रदान करती हैं । गंगा - जल की पवित्रता का कारण उसमें मिली वन्य औषधियाँ ही हैं । इसके अतिरिक्त वन हमें, लकड़ी, फूल - पत्ती, खाद्य - पदार्थ, गोंद तथा अन्य सामान प्रदान करते हैं । **वन - सरंक्षण की आवश्यकता -** दुर्भाग्य से आज भारतवर्ष में केवल २३% वन रह गए हैं । अंधाधुंध कटाई के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई है । वनों का संतुलन बनाए रखने के लिए १०% और अधिक वनों की आवश्यकता है । जैस - जैसे उद्योगों की संख्या बढ़ती जा रही है, वाहन बढ़ते जा रहे हैं, वैसे - वैसे वनों की आवश्यकता और अधिक बढ़ती जाएगी ।	**10**

A.13. सेवा में
स्वास्थ्य अधिकारी
मुंबई नगर निगम
मुंबई

विषय : पेयजल समस्या

महोदय

मैं आपका ध्यान प्रेम नगर के पेयजल संकट की ओर खींचना चाहता हूँ। कई महिने से इस नगर में पानी की मात्रा अत्यंत कम है। सुबह और सायंकाल मुश्किल से एक- एक घंटा नलों में पानी आता है । इतने कम समय में सभी के लिए पर्याप्त जल का संरक्षण नहीं हो पाता है । पानी के बिना हमारा जीना कठिन हो गया है ।

धन्यवाद!

भवदीय
प्रधान, प्रेमनगर
दिनांक - 23-5-2016 **5**

अथवा

परीक्षा भवन
अ.ब.स. केंद्र
मार्च 15, 2016

प्रिय अनन्य,

प्रेम!

कैसे हो ? आशा है, हमेशा की तरह सदाबहार होगे ।

मैं तुम्हारी ओर से जन्मदिन का अति सुंदर उपहार पाकर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम मुझे सुबह सैर के लिए तो कभी तैयार नहीं कर सके । अब यह युक्ति अच्छी है। तुमने मेरे लिए इतना सुंदर ट्रेक- सूट भेजा है कि मेरा मन सुबह सैर करने के लिए मचलने लगा है। पर तुम यह न समझना कि मैं तुम्हारी सलाह मान गया हूँ। मैं तो लोगों को यह इतना सुंदर ट्रेक-सूट दिखलाने के लिए हफ्ता-दो- हफ्ता सैर पर जाऊँगा। जब कोई पूछेगा कि कहाँ से लाए हो तो तुम्हें याद करूँगा। भाई अनन्य! मैंने सूट पहनकर देखा है। लगता है, यह मेरे लिए ही बना है। तुम्हारा चयन बहुत सुंदर है। मेरी ओर से बहुत- बहुत धन्यवाद !

भगवान तुम्हें ऐसे-ऐसे बढ़िया उपहार देते रहने की बुद्धि दे ।

तुम्हारा
अमय कुमार **5**

A.14.

(क)

आदर्श जेल पेन

जिसे देखते ही लिखने का मन करे!

प्रवाह ऐसा

कि रुकने का मन ही न करे!!

सस्ता इतना

कि दिल करे साल भर के लिए खरीद डालूँ ।

बच्चों के मन को लुभाए!

युवकों के दिल में बस जाए!!

आदर्श जेल पेन!!!

5

अथवा

खुल गया! खुशखबरी! **खुल गया!**

टाइगर जूते

खरीदने के लिए अब आपको दिल्ली नहीं जाना पड़ेगा ।

पधारिए

किला बाज़ार गाजियाबाद की दुकान न. 134 पर और खरीदिए अपने मनपसंद

टाइगर जूते, टाइगर चप्पलें

टाइगर सैंडल, टाइगर स्पोर्ट्स शूज़

तथा बच्चों के मनभावन सजीले जूते!

दुकान प्रातः 9 से शाम 8 बजे तक खुली रहती है ।

संपर्क : 08456789210

5

❖❖❖❖